शिक्षा मनोविज्ञान की विधियाँ(Methods of Education Psychology)

शिक्षा मनोविज्ञान में अध्ययन और अनुसंधान के लिए सामान्य रूप से जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है उनको दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:-

(1) आत्मनिष्ठ विधियाँ (Subjective Method)

- आत्मनिरीक्षण विधि
- गाथा वर्णन विधि

(2) वस्तुनिष्ठ विधियाँ (Objective Method)

(2) वस्तुनिष्ठ विधियाँ (Objective Method)

- प्रयोगात्मक विधि
- निरीक्षण विधि
- जीवन इतिहास विधि
- उपचारात्मक विधि
- विकासात्मक विधि
- मनोविश्लेषण विधि
- तुलनात्मक विधि
- सांख्यिकी विधि
- परीक्षण विधि
- साक्षात्कार विधि
- प्रश्नावली विधि
- विभेदात्मक विधि
- मनोभौतिकी विधि

आत्म निरीक्षण विधि (अर्न्तदर्शन विधि)

आत्म निरीक्षण विधि को अर्न्तदर्शन, अन्तर्निरीक्षण विधि (Introspection) भी कहते है। स्टाउट के अनुसार "अपना मानसिक क्रियाओं का क्रमबद्ध अध्ययन ही अन्तर्निरीक्षण कहलाता है।" वुडवर्थ ने इस विधि को आत्मनिरीक्षण कहा है। इस विधि में व्यक्ति की मानसिक क्रियाएं आत्मगत होती हे। आत्मगत होने के कारण आत्मनिरीक्षण या अन्तर्दर्शन विधि अधिक उपयोगी होती हे।

लॉक के अनुसार – मस्तिष्क द्वारा अपनी स्वयं की क्रियाओं का निरीक्षण।

परिचय : पूर्वकाल के मनोवैज्ञानिक अपनी मस्तिष्क क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिये इसी विधि पर निर्भर थे। वे इसका प्रयोग अपने अनुभवों का पुनः स्मरण और भावनाओं का मूल्यांकन करने के लिये करते थे। वे सुख, दुख, क्रोध और शान्ति, घृणा और प्रेम के समय अपनी भावनाओं और मानसिक दशाओं का निरीक्षण करके उनका वर्णन करते थे।

बहिर्दर्शन या अवलोकन विधि

बहिर्दर्शन विधि (Extrospection) को अवलोकन या निरीक्षण विधि (observational method) भी कहा जाता है। अवलोकन या निरीक्षण का सामान्य अर्थ है- ध्यानपूर्वक देखना। हम किसी के व्यवहार,आचरण एवं क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं आदि को बाहर से ध्यानपूर्वक देखकर उसकी आंतरिक मनःस्थिति का अनुमान लगा सकते है।

गुण

मनोविज्ञान के ज्ञान में वृद्धि : डगलस व हालैण्ड के अनुसार – "मनोविज्ञान ने इस विधि का प्रयोग करके हमारे मनोविज्ञान के ज्ञान में वृद्धि की है।"

अन्य विधियों में सहायक : डगलस व हालैण्ड के अनुसार "यह विधि अन्य विधियों द्वारा प्राप्त किये गये तथ्यों नियमों और सिद्धांन्तों की व्याख्या करने में सहायता देती है।"

यंत्र व सामग्री की आवश्यकता : रॉस के अनुसार "यह विधि खर्चीली नहीं है क्योंकि इसमें किसी विशेष यंत्र या सामग्री की आवश्यकता नहीं पड़ती है।"

प्रयोगशाला की आवश्यकता : यह विधि बहुत सरल है। क्योंकि इसमें किसी प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं है।

रॉस के शब्दों में "मनोवैज्ञानिकों का स्वयं का मस्तिष्क प्रयोगशाला होता है और क्योंकि वह सदैव उसके साथ रहता है इसलिए वह अपनी इच्छानुसार कभी भी निरीक्षण कर सकता है।"

अर्थ : अन्तर्दर्शन का अर्थ है– "अपने आप में देखना।" इसकी व्याख्या करते हुए बी.एन. झा ने लिखा है "आत्मनिरीक्षण अपने स्वयं के मन का निरीक्षण करने की प्रक्रिया है। यह एक प्रकार का आत्मनिरीक्षण है जिसमें हम किसी मानसिक क्रिया के समय अपने मन में उत्पन्न होने वाली स्वयं की भावनाओं और सब प्रकार की प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण, विश्लेषण और वर्णन करते हैं।"

निरीक्षण करने का मतलब - कार्यक्रम की गतिविधियों को जाँचना है कि वह कैसे आगे बढ़ रहीं है. यह देखरेख की क्रिया नियमित और उद्देश्यपूर्ण है. **निरीक्षण** करते समय परियोजना के विकास और स्थिति की जानकारी दाताओं और हिताधिकारियों को देने के साथ साथ इसके संचालकों को इस जानकारी के आधार पर प्रतिपुष्टि (या फीडबैक) भी दी जाती है

हम जानते है अंग्रेजी शब्द के Observation शब्द को निरीक्षण कहा जाता है। जिस का अर्थ होता है निरीक्षण करना या देखना। हम यह भी देखते है इस निरीक्षण में अधिकतर आँखों का प्रयोग किया जाता है। कानों और वाणी का कम।इस विधि के द्वारा प्रत्यक्षत: मिलती है। छोटे बच्चे ना तो प्रश्नों को ठीक से समझ पाते है और न ही उसके उत्तर दे पाते हैं,अत: उनके व्यवहार का अध्ययन करने के लिए निरीक्षणकर्ता बच्चों के समूह में भाग लेता है अथवा दूर खड़ा होकर उनके व्यवहार का अध्ययन करता है। तत्पश्चात् बच्चों के व्यवहार को देखकर वह विश्लेषण द्वारा कुध तथ्यों का पाता लगाता है और उनकी व्याख्या करता है। इस निधि द्वारा बच्चों के सामाजिक विकास, समाज और उनके व्यक्तित्व का सम्बन्ध, उनके नेतृत्व आदि का पता लगाया जाता है। विद्वानों ने निरीक्षण विधि की अलग अलग परिभाषाएं दी हैं –

1. **आँक्सफोर्ड कान्साईज डिक्शनरी के अनुसार –** " अवलोकन का अर्थ है – घटनाओं को, जैसे वे प्रकृति में होती हैं, कार्य तथा कारण से सम्बन्ध की दृष्टि से तथ्य देखना तथा नोट करना है। "

1. **आँक्सफोर्ड कान्साईज डिक्शनरी के अनुसार –** " अवलोकन का अर्थ है – घटनाओं को, जैसे वे प्रकृति में होती हैं, कार्य तथा कारण से सम्बन्ध की दृष्टि से तथ्य देखना तथा नोट करना है। "
2. **प्रो . गुडे एवं हॉट के अनुसार** – " विज्ञान निरीक्षण से आरम्भ होता है और इसे आन्तिम रूप में प्रमाणीकरण के लिए निरीक्षण पर ही लौट आना पड़ता है। "
3. **साइमन्स का विचार –** " सह्भागिक अवलोकन कोई विधि नहीं है, अपितु कई विधियों तथा तकनीकों का एक संयोग है। "
4. **एं बुल्क ने अक्लोकन विधि के सम्बन्ध में लिखा है –** " वस्तुओँ तथा घटनाओं, उनकी विशेषातों एवं उनके मूर्त सम्बन्धों को समझने और उनके सम्बन्ध में हमारे मानसिक अनुभवों की प्रत्यक्ष चेतना को जानने की क्रिया को अवलोकन कहते हैं। "

उपर्युक्त परिभाषओ के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि निरीक्षण विधि बाल व्यवहार का अध्ययन करने के लिए सर्वाधिक उपयोगी विधि मानी जाती है, क्योंकि इस विधि द्वारा बाल व्यवहार का अध्ययन बड़ी आसानी से किया जाता है। इसमें नेत्रों का अधिक प्रयोग होता है और अध्ययनों से सम्बन्धित प्राथमिक सामग्री एकत्रित की जाती है।

निरीक्षण विधि के निम्नलिखित प्रकार हैं –

1. सरल अथवा आनेयंत्रित विधि
2. व्यवस्थित अथवा नियंत्रित निरीक्षण विधि
3. आयोजित निरीक्षण
4. सहभागी निरीक्षण
5. असहभागी निरीक्षण
6. सामूहिक निरीक्षण विधि।

1. **सरल अथवा अनियंत्रित विधि –** इस विधि में निरीक्षक किसी के व्यवहार का अध्ययन उसकी स्वाभाविक पारिस्थिति में तथा उस पर कोई प्रतिरोध लगाए बिना करता है। निरीक्षक का काम व्यवहार का बिना बाधा डाले सिर्फ निरीक्षण करते जाना होता है। इस विधि में व्यवहार के प्रभाव को रोका नहीं जाता। उहाहरण के लिए माना कि निरीक्षक भीड़ के व्यवहार का निरीक्षण करना चाहता है तो इस विधि द्वारा वह उसके व्यवहार को अलग से अर्थात् दूर से देखता है, उसकी वाणी को सुनता है, उसकी क्रियओं, भावों एवं संवेगों को नोट करता रहता है, पर उससे कुछ पूछना नहीं है। इसे अनियंत्रित विधि इसलिए कहते हैं क्योंकि किसी भी घटना का निरीक्षण प्राकृतिक परिस्थितियों में किया जाता है और उन परिस्थितियों पर कोई दबाव नही डाला जाता ।
2. **व्यवस्थित अथवा नियंत्रित निरीक्षण विधि –** इस विधि को व्यवस्थित विधि भी कहते हैं। इसमें निरीक्षक निरीक्षण

2. **व्यवस्थित अथवा नियंत्रित निरीक्षण विधि –** इस विधि को व्यवस्थित विधि भी कहते हैं। इसमें निरीक्षक निरीक्षण की योजना पहले से बना लेता है तथा पूर्व नियोजित तथा व्यवस्थित योजना के अनुसार निरीक्षण करता है। इस योजना द्वारा निरीक्षण पर नियंत्रण किया जाता है, जिससे निरीक्षण की त्रुटियों में कमी आती है। यह नियंत्रण दो प्रकार का होता है। एक तो निरीक्षक स्वयं पर नियंत्रण करता है दूसरा निरीक्षित योजना पर नियंत्रण किया जाता है।
3. **आयोजित निरीक्षण –** इस निरीक्षण मे निरीक्षण करता एक विशेष वातावरण तैयार करता है किसी विशिष्ट विशेषताओ या घटनाओं को जानने के लिए। इस निरीक्षण में पूर्व नियोजित नियंत्रण रखा जाता है तथा फिर बच्चों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के निरीक्षण को या तो आयोजित या नियन्त्रित निरीक्षण कहलाता है। अतः इसमें बच्चों का अध्ययन व्यवस्थित एवं नियंत्रित वातावरण में

3. **आयोजित निरीक्षण –** इस निरीक्षण मे निरीक्षण करता एक विशेष वातावरण तैयार करता है किसी विशिष्ट विशेषताओ या घटनाओं को जानने के लिए। इस निरीक्षण में पूर्व नियोजित नियंत्रण रखा जाता है तथा फिर बच्चों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार के निरीक्षण को या तो आयोजित या नियन्त्रित निरीक्षण कहलाता है। अतः इसमें बच्चों का अध्ययन व्यवस्थित एवं नियंत्रित वातावरण में किया जाता है।
4. **सहभागी निरीक्षण –** इस विधि द्वारा निरीक्षण करने वाला व्यक्ति स्वयं उस समूह में सदस्य के रूप में कार्य करता है जिस समूह का उसे निरीक्षण करना होता है। वह समूह की सभी क्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेता है तथा सूक्ष्म रूप में सदस्यों के व्यवहार को नोट कर लेता है, परन्तु जब समूह के सदस्यों को निरीक्षणकर्ता का पाता चला जाता है तो वह अपने वास्तविक व्यवहार को छिपाने की कोशिश करते हैं जिससे निरीक्षणकर्ता निष्पक्ष और क्स्तुगत

5. **असहभागी निरीक्षण** – इस निरीक्षण विधि में निरीक्षणकर्ता विधार्थियों के समूह से बहार रहकर उनके व्यवहार का निरीक्षण करता है इस विधि में निरीक्षण करता है। इस विधि में निरीक्षणकर्ता और समूह के सदस्यों मे पारस्परिक अन्त : क्रिया नहीं हो पाती । इस विधि में निरीक्षणकर्ता और समूह के सदस्यों में पारस्परिक अन्त : क्रिया नहीं हो पाती। इस विधि द्वारा प्राप्त किए गए परिणाम अपेक्षाकृत निष्पक्ष और वस्तुगत होते हैं।
6. **सामूहिक निरीक्षण –** इस विधि में नियंत्रित और अनियंत्रित दोनों प्रकार की विधियों का बराबार से प्रयोग किया जाता है। इस विधि द्वारा बालकों की समस्या या किसी घटना का निरीक्षण उनके अनुसंधान कार्यक्ताओं द्वारा किया जाता है जो उस सामाजिक घटना के विशिष्ट पहलुओं के विशेषज्ञ होते हैं।

निरीक्षण विधि के पग (चरण)

निरीक्षण विधि को प्रयोग में लाने के लिए चार पग हैं –

1. तैयारी करना – सबसे पहले निरीक्षण कर्ता को यह निश्चित किया जाना चाहिए की बालक के किस प्रकार के निरीक्षण द्वारा कौन सी आवश्यक जानकरी प्राप्त की जाए। इस के बाद ही निरीक्षण की योजना बनाई जाती है साथ साथ इस कार्य में उपस्थित होने वाली समस्याओं का हल निकालने की तैयारी कर ली जाती है।
2. व्यवहार का निरीक्षण – इस चरण में यह ध्यान रखा जाता है की विद्यार्थी को यह पता ना चले कि कोई उसका व्यवहार का निरीक्षण कर रहा है इस प्रकार से विधार्थी आपने स्वभाविक रूप में अपाने कर्य को कर सके और निरीक्षणकर्ता उसके सम्पर्क में आकर उसके स्वाभाविक व्यवहार का पाता लगा सके, और उन्हे लिख सके।

निरीक्षणकर्ता उसके सम्पर्क में आकर उसके स्वाभाविक व्यवहार का पाता लगा सके, और उन्हे लिख सके।

3. निरीक्षण कार्य का विश्लेषण और व्याख्या – विद्यार्थियों के व्यवहार का निरीक्षण करने के बाद निरीक्षण के समय जो नोट बनाए जाते हैं जिस के आधार पर उचित प्रकार से विश्लेषण किया जाता है और बच्चे के व्यवहार और व्यक्तित्व के बारे में उचित निष्कर्ष निकाले जाते हैं।
4. सामान्यीकरण करना – चौथी अवस्था में मनोवैज्ञानिक विश्लेषित किए गए तथ्यों के आधार पर सर्वमान्य नियम बनाते हैं और यह निष्कर्ष निकालते हैं कि एक विशेष आयु के बच्चे विशेष अवस्था में कैसे एक जैसा व्यवहार करते है।